कृति	:	<u>और उद्धार हो गया</u>
कृतिकार	:	मुनि प्रज्ञा सागर
प्रकाशक	:	जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद
प्राप्ति स्थल	:	जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा प्रोफेसर डॉ. शैलेष भाई ए. शाह 1/1 गोकुल अर्पाटमेंट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी अहमदाबाद–380063
मूल्य	:	15/– रूपये मात्र

पुष्प में जो महत्व सुवास का है, दीप में जो महत्व प्रकाश का है, मिश्री में जो महत्व मिठास का है और धर्म में जो महत्व सत्य का है, जीवन में वहीं महत्व सन्त का है। जिस प्रकार सुवास के बिना पुष्प, प्रकाश के बिना दीप, मिठास के बिना मिश्री और सत्य अहिंसा के बिना धर्म व्यर्थ है उसी प्रकार सन्त और सत्संग के बिना यह दुर्लभतम मानव जीवन भी व्यर्थ है। जिन्हें सत्संग के बिना जीवन व्यर्थ नजर आता है वे कहते हैं जो दिन साधु न मिले, तो दिन होय उपास। जो सन्तों की कीमत समझ लेते है उनके भीतर से ही यह वचन निकलता है। उन्हें ही सत्संग के बिना उपवास सा महसूस होता है।

सत्संग आत्मा का खुराक है और भोजन शरीर की। शरीर के लिये तो सभी व्यवस्था कर लेते है। मनुष्य तो मनुष्य, पशु–पक्ष भी। परन्तु आत्मा की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। पशु पक्षियों को तो नासमझ कहकर क्षमा किया जा सकता है क्योंकि वे ताजिन्दगी इस तत्व से अनविज्ञ रहते हैं और उनमें इसे जानने की क्षमता भी नहीं होती। परन्तु सम्पूर्ण जीव जाति में मनुष्य को ही यह अधिकार प्राप्त है। लेकिन दुनिया में सबसे समझदार कहा जाने वाला इंसान, जीवन के अंत तक अपने आपको नहीं समझ पाता। और न समझ पायेगा क्योंकि स्वयं को समझने के लिए सत्संग जरूरी है। जिस प्रकार शरीर को खुराक देने से शरीर स्वस्थ व तन्दुरस्त रहता है उसी प्रकार आत्मा को आत्मा की खुराक देने से आत्मा स्वस्थ व तंदुरस्त रहती है। लेकिन याद रहें, शरीर की व्यवस्था तो तुम्हारी मां–बहन, बेटी, पत्नी कोई भी कर सकती है, परन्तु

आत्मा की व्यवस्था सिर्फ संतकृपा से ही हो सकती है। क्योंकि वे जानते हैं कि आत्मा का भोजन क्या है? उसे क्या पसंद है? इसलिये तो जब उनके सत्संग में जाते हो तो वे तुम्हें ज्ञानामृत भोजन ज्ञान का अमृत परोसते है। जो उसे श्रद्धा से ग्रहण कर उसका स्वाद ले लेते है। वे बार–बार व्यसनी व्यक्ति की तरह विद्याव्यसनी बनकर उसका पान करने के लिये संत चरण में जाते है। छक्कर पीते है फिर भी कहते हैं, पिव पिव लागे प्यास। अभी तुम तृप्त हो। इसीलिये पानी की तलाश नहीं करते जिस दिन प्यास लगेगी उसी दिन पानी की तलाश कर दोगे। क्योंकि प्यासा आदमी ही पानी की तलाश करता है। यदि तुम्हें भी प्यास होगी हो तुम भी संत की तलाश कर लोगे, और सुराही रूपी संत के समक्ष प्याला।

बनकर समर्पित हो जाओगे। क्योंकि समर्पित होने से ही प्याला भरता है और प्याला भरे होने से ही प्यास बुझती है। तो आत्मा की भूख और प्यास मिटाने के लिये संत समागम और प्रभु भजन आवश्यक है।

याद रहें, सत्संग और प्रभु भजन जीवन में बड़ी दुर्लभता से मिलते हैं। इनकी प्राप्ति के लिये जन्मों–जन्मों का पुण्य चाहिये तब कहीं जाकर घड़ी आधी घड़ी का सत्संग मिलता है और वह भी पूरी तरह से घटित हो जाये यह और कठिन बात है। क्योंकि सत्संग मिलना एक और बात है और सत्संग घटित होना दूसरी बात है। सत्संग मिलने का मतलब है संतों का दीदार होना और सत्संग घटित होने का मतलब है– संतों से प्यार होना। दीदार में सिर्फ दर्शन होता है और प्यार में सम्पूर्ण समर्पण। समर्पण के साथ किया गया सत्संग ही जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है। यदि आपके जीवन में सत्संग से परिवर्तन नहीं आ पा रहा है तो सच मानिये इसमें संतों की नहीं, अपितु आपके समर्पण की कमी है। अतः सन्तों की साधना पर संदेह करने की बजाय अपने समर्पण को पूर्ण करें, ताकि सत्संग घटित हो सकें। याद रहें, समपर्ण मिट्टी के द्रोणाचार्य से भी एकलव्य को शिक्षा और सिद्धि प्राप्त करा देता है हजारों वर्ष बाद विष के प्याले में मीरा को श्रीकृष्ण का दर्शन करा देता है। काले नाग को सती सोमा के हाथ में पुष्पहार बना देता है। मेंढ़क को क्षणभर में देवत्व...........................

....